मिलते तो उन्हें स्वस्थ पशुओं के स्वास्थ्य में मिला लिया जाता है।

- आजकल महामारी से बचाव के टीके पशु–पालन विभाग द्वारा निःशुल्क लगाए जाते है। जैसे–गलघोटू के प्रति मई या जून में, लंगड़िया एवं विषहरी के प्रति अगस्त–सितम्बर में और पशु प्लेग के प्रति अक्टूबर–नवम्बर में ये टीके लगवा लेने से पशुओं में इन रोगों का प्रकोप नही हो पाता है।

टीकाकरण :

टीकाकरण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिय पशुपालकों को अपने नजदीकी पशुचिकिसकों से सलाह लेनी चाहिए जिससे कि उनके पशु रोग विहीन जिन्दगी जीते हुए अत्यधिक उत्पादन दे सकता है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि पशुचिकित्सको के द्वारा दिया गया टीकाकरण का समय सारणी का अनुसरण किया जाए।

संक्रामक रोगों से टीकाकरण द्वारा पशुओं का बचाव

रोग का नाम	प्रभावित पशु	वैक्सीन	वक्सीन का आयु	डोज	बुस्टर डोज	अन्तराल	सीजन
1.खुरपका और मुंहपका	रोमान्थी पशु सूकर	खुरपका, मुहपका टीका पोलीवेलेंट अक्रिय सेल कल्चर टिका	6–8 सप्ताह	10 ml	12 माह	सलाना	नवम्बर एवं दिसम्बर
2. चेचक	गौपशु भैंस, भेड़ बकरी, घोड़ा सूकर ऊँट एवं मुर्गी	फार्मेलीन युक्त भेड़ चेचक जैल टिका, जीवित जैल अवशोसि टीका जीवित तनुकृत टिका	सभी उम्र	3 ml	रिपीट 6 माह में रिपीट सलाना		दिसम्बर / मार्च
3. ब्लूटंग, नीली जिह्वा	भेड़, कभी कभार गो एवं बकरी	पोलीवैलेंट एवीनाइज्ड ब्लू टंग वैक्सीन	6 माह	1 ml		दो साल पर	इनडेमीक जगह में
4.तिल्ली ज्वर, गिल्टी रोग	गोपशु, भेड़ बकरी, घोड़ा खच्चर, सूकर एवं कुत्ता	एन्थ्रैक्स स्पोट वैक्सीन	सभी उम्र	1 ml	6 माह	सलाना	फरवरी, मार्च अप्रैल एवं मई
5.लंगड़ी ज्वर(ब्लैक लैग)	कम उम्र के गोपशु भैंस,भेड़ और बकरी	पॉली वैलेन्ट वैक्सीन	सभी उम्र	5 ml	6 माह	सलाना	सभी समय इनडेमीक स्थान पर
6.गलघोटू, शिपिंग ज्वर एच0 एस0	गौ पशु, भैंस बन्य रोमान्थी, भेड़ बकरियाँ, सुकर	एच0 एस0 एडजुवेन्ट वैक्सीन	सभी उम्र	3 ml	6 माह	सलाना	मई एवं जून

आलेख्य एवं प्रस्तुतिकरणः-
डॉ संजीव कुमार, सहायक प्रध्यापक, पैथोलॉजी विभाग एवं
डॉ पी. के. सिंह, सहायक प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा विभाग,
विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय परिसर पटना-14
Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in
Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

RE: 8051910781/ March 2022

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2022-38

जानवरों में रोगों की रोकथाम के उपाय

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

जानवरों में रोगोंकी रोकथाम के उपाय

पशुओं को होने वाले विभिन्न प्रकार के रोगों का पशुपालन में महत्वपूर्ण स्थान हैं। पशुओं के वह रोग जो किसी रोगाणु (यथा जीवाणु, विशाणु, कवक एवं परजीवी आदि) के संक्रमण से उत्पन्न होते हैं,उन्हें **संक्रामक रोग** कहा जाता हैं। कुछ संक्रामक रोग आपसी संपर्क से, सामग्री के छूने पर फैलतें हैं, ऐसे रोगो को छुआछूत से फैलने वाले रोग कहते हैं।

जब ऐसे रोग स्वस्थ पशु को रोगी पशु के सीधे सम्पर्क में आने से लगते है, तो इन्हें छूत के रोग कहते है। संक्रमण एवं छूत के रोग बहुत भयानक होते है, जिनमें भारी संख्या में पशुओं की प्रतिवर्ष मृत्यु हो जाती है। पशुओं के संक्रामक रोग केवल राष्ट्र की आर्थिक क्षति के लिए उत्तरदायी नहीं है वरन्

इनके द्वारा पशु–धन का जो विनाश होता है, उससे कृषि कार्य को भी भारी धक्का पहुँचता है।

संक्रामक रोगाणु दूध, मांस, अंडा, मल, मूत्र, वासए स्त्राव/निःस्त्रावद्व आदि के साथ रोगी के शरीर से निकलकर स्वस्थ पशुओं को रोगग्रस्त कर देते हैं। इस क्रिया को रोगाणुओं का संचारणकहा जाता है। रोगाणुओं का संचारण सीधे संपर्क, संदूशित आहार, पानी, हवा, बाड़ा या बाड़े की अन्य सामग्रियों एवं सेवकों के माध्यम से होता हैं। इसकें अलावा अनेक रोगाणुओं का फैलाव या संचारण रोगवाहक कीटों द्वारा भी होता हैं। संक्रामक रोगों से आज भी सबसे अधिक हानि होती है । रिण्डरपेस्ट रोग इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। एक रोगाणु से होने वाले रोगों के साथ – साथ, रोग उत्पन्न करने वाले अन्य कारकों की ओर आजकल विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अनेक संक्रामक रोगों के प्रकट होने में असंक्रामक तथा पूर्वानुकूल परिस्थितियों का भी योगदान होता है। आहार में पोशक तत्वों की कमी होने से पशु संक्रामक रोगाणुओं के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं और रोगाणु संचारण होने पर रोगग्रस्त हो सकते हैं।

संक्रामक एवं छुत रोगों से बचाने क लिए पहले हम पशु को संतुलित आहार, शुद्ध वातावरण, साफ सफाई एवं

टिकाकरण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।, क्योंकि बचाव, उपचार की अपेक्षा अच्छा है। संक्रामक एवं छूत रोगों से ग्रसित पशुओं को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

- रोग की आशंका होने पर तुरन्त ही समीप के पशु–चिकित्सक को सूचना देकर बुलावा भेजना चाहिए, जिससे कि उसकी सहायता से रोग आगे न बढ़ने पावे।
- संक्रामक एवं छूत के रोग का सन्देह होते ही बीमार पशु स्वस्थ पशुओं से पृथक कर देना चाहिए। और उसकी अलग ही देखभाल करनी चाहिए। रोगी का अच्छा हो जाने पर स्वस्थ पशुओं को लागातार नित्य जाच करनी चाहिए और यदि उनमें लेशमात्र भी बीमारी का सन्देह हो, तो तुरन्त अलग कर देना चाहिए।
- किसी स्थान में रोग फैलने की आसंका हो, तो वहॉ आने वाले सभी पशुओं को या तो मार्ग में ही बचाब के टीके लगवाए जायें अथवा कुछ समय के लिए इन मेलों को स्थगित कर दिया जाए।
- पशु गृह के सतह तथा दीवारें खूब अच्छी तरह पानी से साफ करके 3 प्रतिशत कास्टिक सोडा या 5 प्रतिशत कार्बोलिक अम्ल घोल से धो डालनी चाहिए, तत्पश्चात् दीवारों को कार्बोलिक अम्ल युक्त चूने के घोल से पुतवा देना चाहिए। रोगी के सम्पर्क में आये हुए बर्तन तथा जंजीरें आदि गर्म भाप से अथवा उबलते हुए पानी में खौलाकर जीवाणु रहित करना चाहिए।
- बीमार पशुओं द्वारा चरे हुए चारागाह रोग फैलाने में बहुत सहायक होते है। अतः ऐसे चारागाहों पर जहॉ बीमार पशु चर चुके हों, स्वस्थ पशु नहीं चराना चाहिए और उनकों अच्छे, साफ एवं शुद्ध चारागाहों पर चराना चाहिए। दूषित चारागाह पर चुना छिड़कवा कर अथवा हल चलवा कर उसे 5–6 माह की अवधि के लिए खाली छोड़ देना चाहिए।
- संक्रामक रोग से मरे हुए पशु का शव खुले मैदान, नदी या तालाब में नहीं फेंकना चाहिए और न उसकी खाल ही उतार देना चाहिए। मरे हुए पशु उससे सम्बन्धित पदार्थ जैसे – मल–बिछावन आदि को या तो आग में जला देना चाहिए अथवा 1.5–2 मीटर गहरा गड्ढा खोदकर उसके उपर व नीचे चूने की 20–30 सेमी की सतह बिछाकर पशु के शव को मिट्टी से ढक देना चाहिए।

- बीमारी फैलने की ऋतु में स्वस्थ पशुओं के चारे एवं पानी पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पशुओं को कोई भी ऐसा आहार न दिया जाय जो उनके पेट में कब्ज करे, नदियों, नहरों तथा तालाबों का पानी, ताकि रोग के कीटाणुओं अथवा विभिन्न प्रकार के परजीवी कीटों से संदूषित हो सकता है, पशुओं को नहीं पिलाना चाहिए।
- इस विधि के अन्तर्गत, सभी नए खरीदे गए पशुओं को 15 से 21 दिन तक अलग रखना चाहिए। यदि इस अवधि में उनमें कोई भी बीमारी के लक्षण नहीं